|| परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम ||

वर्ष : ६ अंक : ११-१२
एप्रिल २०१६ पृष्ठसंख्या : ६८

सत्यवेध

महाराष्ट्रासह गोवा व सीमाभागापर्यंत पोहोचणारा अंक.

घरकुल

विशेषांक

किंमत : २०/-

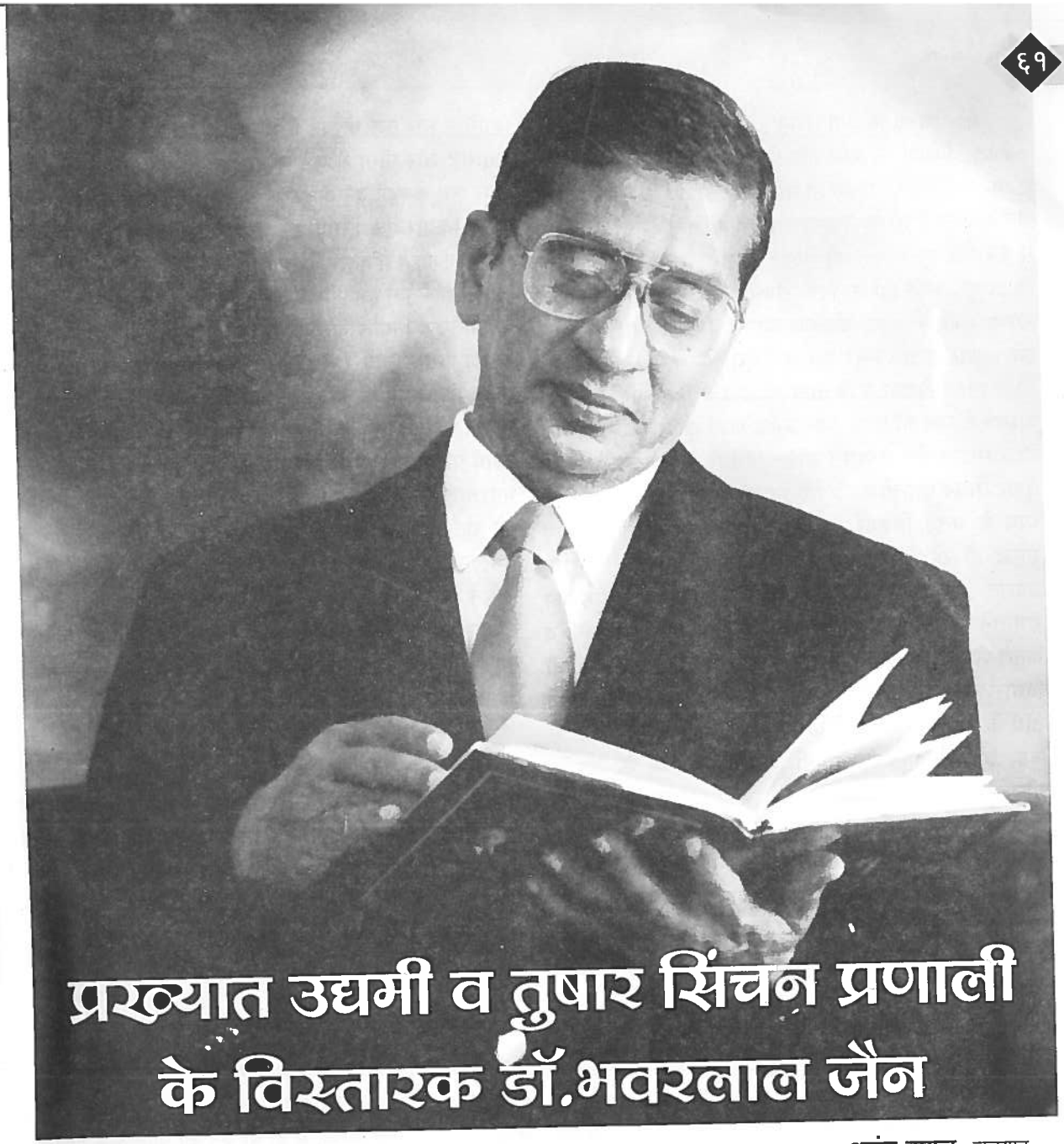

प्रख्यात उद्यमी व तुषार सिंचन प्रणाली के विस्तारक डॉ.भवरलाल जैन

• अनंत बागूल, जळगाव

“ श्री जैन ने अपनी सहनशक्ति से एक कृषक समाज का निर्माण करते हुए जैन हाई-टैक कृषि संस्थान, कृषि आधारित शोध एवं विकास संस्थान, प्रयोगात्मक प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्रों आदि का निर्माण किया। परिणाम स्वरूप लगभग बीस हजार से अधिक कृषक एवं अन्य उत्सुक प्रतिवर्ष इस हाई-टेक कृषि में उपस्थिती दर्ज करा ताजातरीन विकास के गवाह बनते हैं। ”

खान्देश के प्रख्यात उद्यमी, खेती व गांधी विचारधारा के प्रचारक, चिंतक डा.भवरलाल जैन का गुरूवार शाम को ४ बजकर ७ मिनट पर निधन हो गया। वह ७८ वर्ष के थे। भवरलाल जैन का जन्म जिले के जामनेर तहसील के वाकोद जैसे छोटे गांव में १२ दिसंबर १९३७ को हुआ। उन्होंने बी.कॉम.एल.एल.बी. शिक्षा पुरी करते हुए सरकारी नौकरी को लात मारकर बिल्कुल नगण्य पुंजी से अपना छोटासा व्यापार प्रारंभ किया। जो आज एक विशाल उद्योग समुह के रूप में देश-विदेश में फैला हुआ है। भारत सहित विश्वभर में किसानो को उच्च कृषी तकनीकि ज्ञान के माध्यम से जल की बचत देकर समृद्ध करने का मुल मंत्र देने वाले डॉ.भवरलाल जैन ने भारत सहित विश्वभर में ठिबक सिंचन यां तुषार सिंचन प्रणाली का प्रचार-प्रसार किया। उनके इस दूरदर्शी ध्यय के चलते विश्वभर में लाखो किसान लाभांवित होते हुए समृद्ध हो रहे है। पद्मश्री से सम्मानित डॉ.भवरलाल जैन के उपरांत उनके स्थापित किए गए विशाल उद्योग समुह को संभालने के लिए बडे पुत्र अशोक, अनिल जैन, अजित जैन व अतुल जैन मौजूद है। भवरलाल जैन ने जैन हिल्स पर ही गांधी विचारो का प्रसार करते हुए एक भव्य गांधी स्मारक का गांधी तीर्थ के रूप में निर्माण भी कराया। इस गांधी तीर्थ में गांधी से जुडा व्यापक साहित्य, सामग्री, उनकी स्मृतिओं के अवशेष मौजूद है।

कृषि के विकास एवं ग्रामीण उत्थान में योगदान

असाधारण प्रतिभा के धनी भंवरलाल जैन ने अपने प्रारम्भिक काल १९६३ में कृषि को अपने जीवन का लक्ष्य चुना। वर्ष १९६३ से १९७८ के दरम्यान श्री जैन ने कृषि क्षेत्र की असीम सम्भावनाओं से जुडते हुए उर्वरक खाद, बीज, रासायनिक खाद, टैक्टर एवं कलपुर्जे, सिचाई पम्प एवं सम्बन्धित डीजल आयल आदि का व्यापार प्रारम्भ किया। धरती से जुडे पेशेवर किसान के रूप में भवरलाल जी जैन ने अपनी दूरदृष्टि और पारखी नजर से वर्ष १९७८ में कृषि उत्पादों के साथ अपने औद्योगिक जीवन की शुरूवात की। श्री जैन ने कृषकों को एकत्रित कर उन्हे पपीते की खेती के लिए प्रोत्साहित किया, साथ ही साथ उन कृषकों से उचित दर पर पपी ता दूध खरीदने का आश्वासन भी दिया। कृषकों के हित में सोचते हु' श्री भवरलाल जैन ने पपीता कैन्डी बनाने के लिए कृषकों से दागदार पपीते तक खरीदकर उनके साथ लम्बे समय तक जुडा रहने वाला रिश्ता कायम कर लिया। पपीता दूध के साथ दागदार पपीता भी खरीदकर श्री जैन ने कृषकों को उत्तम आर्थिक स्तर तक पहुँचने में सहायता की। वास्तव में उन्होंने - महाराष्ट्र और सीमा से जुडे मध्यप्रदेश एवं गुजरात के २५०० से उपर लघू कृषकों को अनुशंषा आधार पर पपीता कृषि के लिए प्रेरित किया। एक निर्धारित प्रक्रिया द्वारा पपीता दूध को पपेन नामक एंजाइम में बदला जाता है।

श्री जैन ने इस पपेन एंजाइम को वर्ष १९७८ से २००२ तक शतप्रतिशत निर्यात करके कृषकों को पपीते की महत्तता का स्मरण कराया। वर्ष १९७८ में पपेन प्राकृतिक रूप में मात्र बीस रूपये किलोग्राम पर बिकता था। किन्तु अन्त में पूरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद वही उच्चतम गुणवत्ता का शुद्ध पपेन तीन हजार रूपये प्रति किलोग्राम पर निर्यात किया जाता था। इस तरह श्री. भंवरलाल जैन ने पूर्णतयः कृषि पर आधारित प्रक्रियारत् पपीते को शत प्रतिशत निर्यातानुकूल बना कर औद्योगिक जगत में चमत्कारिक एवं साहसिक कार्य कर दिखाया। वर्ष १९८० में श्री जैन ने मुख्यतः कृषि सिंचन के लिए उपयोगी पीवीसीपाईप का निर्माण प्रारम्भ किया। पीवीसी पाईप के पीछे वैज्ञानिक आधार यह है कि यह पानी के रिसाव एवं वाष्पन को रोक कर कृषकों को समुचित मात्रा में खेती के लिए पानी उपलब्ध कराता है। उनके इस क्षेत्र में प्रवेश से पहले तीन अन्य पाईप निर्माता अस्तित्व में थे। परन्तु ये निर्माता कृषि के सामाजिक वातावरण को समझने में असमर्थ थे। इन उद्योजकों से भिन्न श्री जैन ने एक विशिष्ट विपणन नीति अपनाई। उन्होंने जनसमाज से जुडे हुए, महाराष्ट्र एवं संल्गन प्रदेशों में जिला स्तर पर अधिकृत विक्रेता नियुक्त किये। श्री जैन ने पीवीसी पाइप को कृषि सिचाई हेतू सर्वप्रिय बनाने के लिए कठोर परिश्रम किया। श्री जैन का यह परिश्रम ग्रामीण विपणन में एक स्वर्ण क्रांति के रूप में साबित हुआ।

पीवीसी पाइप इतने लोकप्रिय हो गये कि श्री भवरलाल जैन को वर्ष १९८० में अपने उत्पाद की क्षमता १०० टन प्रति वर्ष से बढाकर वर्ष १९८४ तक उत्पाद क्षमता २३,००० टन प्रति वर्ष करनी पडी। क्योंकि प्रारम्भ से ही श्री जैन की नीति कम लाभांश के साथ अधिक उत्पादन की रही है। इसी नीति के कारण कच्चे माल के बढते दामों के बावजूद करीबन पांच वर्ष तक श्री जैन ने पीवीसी पाईपों के दामों में स्थिरता कायम रखी। इस तरह पीवीसी पाईप उद्योग में श्री जैन के प्रवेश ने एक नया इतिहास रच डाला। श्री भवरलाल जैन की अप्रत्याशित सफलता ने लघू उद्योजकों को इतना आकर्षित किया कि अल्प काल में ही सम्पूर्ण भारत में १५० लघू उद्योग ईकाईयां उठ खडी हुई। इस

तरह से पीवीसी पाइप की सुनिश्चित उपलब्धता ने कृषकों को परिवहन नुकसान से बचाते हुए कृषि उत्पादन को तीव्र किया। इस तरह कृषि में श्री. जैन का तार्किक ज्ञान बढता गया और वह जल बचाने एवं कृषि उत्पन्न की प्रगति की खोज में आगे बढते गये। भारत सरकार ने १९८२-८३ में सिचाई की छिडकाव एवं ठिबक पद्धति को प्रोत्साहित करने हेतू एक अनुदान नीति दी। महाराष्ट्र सरकार ने इसी तरह की एक नीति उत्तरार्ध १९८६ में प्रस्तावित की थी। तो भी इन नीतियों के जरिये १९८८-८९ तक महाराष्ट्र मे सिर्फ ४०० हेक्टेयर एवं पूरे भारत में ६०० हेक्टेयर क्षेत्र ठिबक पद्धति की सिचाई का लाभ उठा पाया।

सम्पूर्ण दृश्य लेखा ऐसा है कि आयात किये गये विदेशी उपकरण वितरित तो किये गये परन्तू कोई भी सेवायें उपलब्ध नहीं कराई गई। परिणाम स्वरूप उन्नति में एक सिकोड़ उत्पन्न हो गया। परन्तू १९८८ में जैन इरिगेशन के इस क्षेत्र में प्रवेश के बाद से विस्तृत एवं चमत्कार पूर्ण दृश्य परिवर्तित हो चुका है। बिल्कुल प्रारम्भ से श्री जैन ने एकीकृत सोच विकसित की एवं सिर्फ निर्माण और गुणवत्ता पूर्ण उपकरण जैसे ट्यूब एवं फिल्टर के विपणन का विचार न करते हुए उन्होने कृषकों को अति सहयोगी सुविधाऐं भी उपलब्ध कराई। जैसे कृषी वैज्ञानिकों एवं अभियांत्रिको को नियतकालिक कृषी निरिक्षण, प्रशिक्षित कारीगर उपलब्ध कराना, प्रदर्शन, संवाद, साहित्य, सफलता के मंत्र एवं परिणाम जनक सांख्यिकी के आधार पर कृषकों को शिक्षित किया। यह समस्त सुविधाऐं मूलभूत सुविधाओं जैसे भूमि सर्वेक्षण, मृदा एवं जल विश्लेषण और सिचाई उपकरण की प्रतिष्ठापन के पूर्व विस्तृत कैड की तैयारी भी करवाती थी एवं कृषि और मौसम संबन्धित जानकारी भी उपलब्ध कराती थी।

कृषकों, प्रशासको, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सलाहकारों एवं हितचिन्तकों के लिए एक वृहद कार्यक्रम जागरूकता हेतू चलाया गया। कृषक मेला, प्रशिक्षण शिबिर इत्यादी बिल्कुल उत्साहपूर्वक एवं जोशिले तौर पर आयोजित किये गये। सिचाई आयोजन एवं फसल के अनुसार जल की आवश्यकता एक मानक के तौर पर कृषकों को उनके घर पर उपलब्ध कराये गये। शुरूवात में कम्पनी के प्रशिक्षित व्यक्ति ने सामान्य जन से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध कराई और इस तरह मूलभूत बातों से शुरूवात कर सम्पूर्ण ज्ञान दिया। इस तरह सम्पूर्ण देश में टपक सिंचन पद्धति का सम्पूर्णतय: वैज्ञानिक आधार बन गया। अब तक देश के तकरीबन हर राज्य से ४१५ कृषक समूह यहाँ अपनी भेंट दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त लगभग ५ लाख किसान इस तरह के कार्यक्रमों में भाग ले चुके हैं। लगभग ४,००० से अधिक छात्र शोध एवं विकास के लिए, बीडीओ, एडीओ, ग्रामसेवक सरीखे १,२०० सरकारी नुमाइन्दे भी प्रशिक्षित किये जा चुके हैं। महाराष्ट्र से लगे लगभग सभी पांच राज्यों के कृषि मंत्री भी इन विकासात्मक कार्यों का अवलोकन करने के लिए यहाँ अपनी उपस्थिती दर्ज करा चुके हैं।

यहाँ तक की उप प्रधानमंत्री, उप राष्ट्रपति व अन्य केन्द्रिय स्तर के मंत्री भी कृषकों के हित में चल रहे इन आश्चर्यजनक कार्यों की विकास गाथा में भेंट देकर प्रगति के साक्षी बन चुके हैं। श्री जैन के इन अतिदुष्कर प्रयत्नो का ही नतीजा है कि वर्ष १९८८ में सिचाई के लिए ६०० हेक्टेयर भूमि का प्रतिशत वर्ष २००८ तक लगभग १५ लाख हेक्टेयर तक लाभान्वित हो रहा है। आज कम्पनी के विकास में प्रतिवर्ष एक से सवा लाख हेक्टेयर सिंचन भूमि का इजाफा हो रहा है। देश के सबसे प्रगतिशील राज्य महाराष्ट्र के जलगाँव में केला उत्पादन, नासिक में अंगूर एवं सोलापुर में अनार आदि फलों के लिए सिचाई बूंद-बूंद से टपक सिंचन पद्धति से की जाती है। आज जबकि विदर्भ का एक बहुत बडा कृषक समाज बागवानी के लिए इस टपक सिंचन पद्धति को अपना रहा है वहीं दुसरी ओर मराठवाडा

परिसर में कपास एवं पश्चिम महाराष्ट्र में गन्ने की खेती के लिए इसे सहजता से स्वीकार किया जा रहा है। इस मार्ग को प्रशस्त करने में श्री जैन ने अपने जीवन और पेशे का एक बहूमूल्य स्वर्णीम भाग लगा डाला। वे एक नये कृषि उद्योग के वास्तविक निर्माण के जनक बन गये। और एक नई क्रांति का उदय हुआ। टपक सिंचन प्रणाली को विश्व स्तर पर प्रयोग करने वाले देशों में भारत का दूसरा क्रमांक आता है और यहाँ यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि, इसका सम्पूर्ण श्रेय श्री भवरलाल जैन एवं उनके संस्थान को जाता है। जैन इरिगेशन आज ठिबक सिचाई का पर्याय बन चुका है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि महाराष्ट्र, भारत ही नहीं अपितू विश्व में भी जैन इरिगेशन ने नाम रोशन करते हुए कई सम्मान प्राप्त किये हैं।

श्री भवरलाल जैन के अगले पड़ाव में मील के पत्थर के रूप में केले का कोशिका एवं अतक निर्माण एक प्रभावी कदम के रूप में आया। जो कृषि क्षेत्र में बायो-तकनीक के समावेश के रूप में एक प्रभावपूर्ण सार्थकता का परिचायक है। श्री जैन केले के इस बायो तकनीक उत्पादन के प्रदीर्घ एवं प्रभावी परिणामों के लिए संघर्षरत है। उनका विश्वास है कि वे उच्च गुणवत्ता के परिणाम हासिल करने में सफल रहेंगे। श्री जैन की इस प्रक्रिया रत् गुणवत्ता पूर्ण उपज से आज देश के हजारों किसान अपनी केले की फसल में दोगुने से अधिक इजाफा कर चुके हैं। कृषकों ने अठ्ठारह महिने की फसल उत्पादन की प्रक्रिया में से मात्र ग्यारह महिने में फसल प्रक्रिया पूर्ण कर ग्यारह किलो के केले के गठ्ठे की जगह अब तेईस किलो का केला गठ्ठा प्राप्त किया है। कृषकों की इस सफलता का संदेश आग की तरह पूर्वी राज्यों सहित सम्पूर्ण देश में फैल गया। नतीजतन देश भर के किसानो ने श्री जैन की इस गुणवत्ता पूर्ण प्रक्रियारत उत्पादन को अपनाने के लिए अपना नामांकन दर्ज करा कर, ऊतकीय केले के बुवाई योग्य नमूनों की प्रतिक्षा प्रारम्भ कर रखी है। और आज स्थिती यह है कि देश भर से बढती मांग में किसान अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे हैं।

श्री जैन ने प्रथमत: ही व्यापारिक रूप से, सुधारित उन्नत केले की बायोतकनीक से जन्मी नई फसल के परिणाम के रूप में ग्रांड नान के रूप में दर्जेदार केले को बाजार क्षेत्र में उतारा है। उनका स्वप्न था कि वे ग्रांड नान का अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर यूरोप और अमेरिका के बाजारों में निर्यात करें। अधिकांश महत्वपूर्ण देश अपने उपभोग के लिए भारत से अन्य उत्पाद नहीं मंगाते। इसलिए यह श्री जैन के प्रभावी नेतृत्व का ही हिस्सा है जो किसानों के लाभांश में सीधे जुडता है। ताजे प्रक्रियारत केले ग्रांड नान के निर्यात से भारत को विदेशी मुद्रा का लाभ तो हो ही रहा है साथ में भारत की औद्योगिक विकास की दर भी तेजी से बढ़ रही है। अब शोध प्रक्रिया में नये-नये उत्पादनो को प्रस्तुत करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। श्री जैन अपनी जुझारू डिग्री एवं खोजात्मक प्रवृत्ति के चलते प्याज, लहसुन एवं आस्ट्रेलियन सागवान के बायो तकनीक पर आधारित ऊतक प्रक्रिया के निर्माण में भी सफल हुए हैं। अब बायो इंधन पौधों के सूक्ष्म विस्तार की प्रक्रिया पर शोध कार्य जारी हैं।

श्री जैन ने अपनी सहनशक्ति से एक कृषक समाज का निर्माण करते हुए जैन हाई-टैक कृषि संस्थान, कृषि आधारित शोध एवं विकास संस्थान, प्रयोगात्मक प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं विकास केन्द्रों आदिं का निर्माण किया। परिणाम स्वरूप लगभग बीस हजार से अधिक कृषक एवं अन्य उत्सुक प्रतिवर्ष इस हाई-टेक कृषि में उपस्थिती दर्ज करा ताजातरीन विकास के गवाह बनते हैं। इसके साथ ही वे, एक ही छत के नीचे होने वाली जलसंग्रह प्रयास, बंजर भूमि को कृषि योग्य उपजाऊ बनाने, अबड-खाबड पथरीली पहाडी जमीन पर खेती करने, वर्षा जल का संचय एवं उपयोग, पैदावार और हरित क्रांति के साथ बायो बीज, खाद, दवा आदि के बारे में विस्तार से जानकर व अवलोकन कर सम्पूर्ण सजीवता का अनुभव प्राप्त करते हैं। श्री जैन ने निर्जलीकृत सब्जियों एवं प्रक्रियारत् फलों की प्रक्रिया को भी अपनाते हुए इस क्षेत्र में लगभग सौ करोड से भी अधिक का पूंजी निवेश किया। अन्य राज्यों की सम्बद्ध प्रभावी फसल के ताजे फल एवं सब्जियों को एकत्रित करने का कार्य भी किया जाता है।

सफलता की इन सभी शाखाओं में किसानो के बडी मात्रा में उत्थान के पीछे व्यक्तिगत एवं संस्थात्मक सहयोग का योगदान है। किसानो के साथ व्यापार करते हुए भारतीय समाज का गरीब किसान और व्यापार बहुत ही अनौपचारिक टेढीखीर का कार्य है। किन्तू फिर भी श्री भवरलाल जैन का समस्त व्यवसाय किसान और किसानों पर आधारित रहा है। डा.भवरलाल जैन ने इन सबको एक विशिष्ट सिद्धान्तों के साथ चलाते हुए बाद में अपने संस्थान के फायदे का ध्यान रखा। खान्देश के उद्योग क्षेत्र खासतौर से तुषार सिंचन, केले, प्याज के टिश्युकल्चर, सिचाई प्रणाली के संसाधनो के लिए डा.भवरलाल जैन को हमेशा याद रखा जाएगा।